

श्रीमतेरामानुजायनम्। इत्रानां जातारत्वं के विलीः परामयसी तइ है: स्वयं नित्यवासन सिकातल्हा तिसंवृद्धि नीयसारं हतपारि । प्रस्त्य व्यासनिष्यो प्रियं नास ल्या दि ग्राज्य सामग्रवति वृदे जगन्मात्र ने।।।। मानातीत प्रित्रविभवामगलमगलानांव्हः पीढीमध्विज्ञावना अ सयंती स्वकात्याप्रत्यहोग्जिनिवानी ना प्रमानां श्रेयाम् ति श्रियमा निया तिथा या नराषा प्रविधारा। आविभीवःकलंत्राजलधाव्धवेवापियम्वाः।एमानः प्राप्त नित्र निविद्य व ही स्पर्ति विद्याप स्पान्न नित्र है विश्विषदेवात्री कवा री-निविष्य यात्रा विश्व के विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

CC-0. Lal Bahadur Sanskit University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तमाशापरंपतीयुत्रतियुत्तिस्तिति हेन साह प्रथि स्त्यांत्रा २ सापूर्व के निर्मितस्या ने में है विश्वा की संप्रतावित सहिव से यह तस्तो बुक्ते प्राचाः द्वति युववो नहासा-नेप्रचा नाटा जास्याना वमित्रमतः संश्रवंती मुझे दंलस्तीप या मंसितनया विस् पानी श्रेनिति विन्तामा सिं मुतिपिम ना ने ब्रमाव ते वंती ना वर्ते तेरु वित्वव्य वे वित्र अन्य के ।। त्या में ब्रह्म के ति विद्व नित्रपंदीयनी प्रकितेनतः यस हमिति है। विद्वती ख नने: त्या की ने विह्न साविधी सं ह लो ने जुति ना भावार होत्रम् विष्युवादेवतंद्रपतिवः॥१०॥त्वापन्नाति व्ययम्यः 

तन्यानीर्गातिभव्ती हे विचिः साम्यानाता मेव्नायानात्रभातः सीतु मा सिमानः तिमानंभः ताकेल में नेनिस्वाच पीयमं वेयं सेवाचे ही ते चचनरा क्षेत्रनिष्यमञ्चलवान चनाजंगमानीते । ते स्मातादिव मिव्यमन् वे सहनसमाधी प्रतितः सुद्दिनीतिमन् तीपारेल तानकाता।।।।नि अ न्य हं याय च्या ते दे विश्वाना ने पिन वे सन वे सिन न्यान्य द स्त्रीमिति तिविष्ठ सम्बन्धि विषय प्रश्नित्र तीनां तेष् चति वि र निविधीय समान्वविक्रेषा। शाउँ रेश निजन निजन तो र हितोपार्थ मंध्रमित्विषिष्ववयानेक्रमिष्वियागात् प्रेष्वनुत्तन् चेर्नेन गनितियमिनियमिताविके । देश वृति किनितिमिनितियमान

माबोधायायकातायः 3 प्रारतामगम्-साव्नीध्यासुनं द्वाः बर्धित्यविष्ठभवनिष्ठ देनिह तानित प्रदीः सर्वेका निष्यं नस मुस्या संप्रदेशियोति।।१५॥ आर्तनाराष्ट्रितिष्ठनारास्त्रीसार्वीसाव्यक्तिनंत्रीजानीमुख्य मियतामतनंत्रीः यस्पायस्यादिशिवहनते देशविद्वार स्वदीक्ष उ तिस्वातस्याम् महमिकातिन्यतेसंप्रधाः॥शायागानंभ स्विनित्रमन तो युक्त देको त्य श्रेत ध्रित्र प्राप्त प्रमाप्त स्योधा ने वेते थरा यो ते की स्रेषेन पति गरित है बना हे बु की बना कि यां त्यियमिय विवेशोक्ताना व सुना। शाञ्चय व्यामाः व मसनिस्य विज्ञान ज्ञायन के आयुर्ग के जिल्ला के जान के ज य्यागैः

न्यायपन्नीप्राडुमानेरियसम्बन्धायम् मन्नी पतान्हेरोसिन्नि वमधुनताङ्ग्यरात्रासानेत्रः॥१॥धत्रतानाहिषमनवतताबद्गीव भित्रधात ची तुंजाता ना रनतात वे जा बुन हा आ। यह याज दिन पु स्याबरोपीनी समानंद सिवाचुन प्रतेव वित्त सिरावि में से नित्त प सा। १ या आ माने साम ने वितंत महिल्ली अववित्र में तिव म मानुस्मधनुःयः विवनोमस्धन्वा यस्पानि।यन्यन्य तथा नेकल ह्या महिं इ:पदाता संपिरिशातिन सो मान्ति मान्ति हो है ॥१आश्रायामा में स्वासिने में पेने हें पी दिला से मोरायारिश THE RESIDENCE OF THE PROPERTY OF THE CC-0, Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi, Digitized by Sarvagya Sharada Peetnam

बामुदेवाल ४ नाः।।रा।। सार्ज्ञा त्र प्रकृति हे वे स्ता इवान्स व्यादि प्रयेनवित्राचेनम्त्रालि नीलि वित्राचित्रितिता प्रयोगन चित्रमादत्तन्न ही सामामाकी चन्यं वित्र में चेनाई वेया श्रिता ने ।। स्थातं पर्वतिमन् मयनी मा नत्ति व वितास भी ना भने व । 4 जन्ति हनोमाने महेलवाता पाचे कि त्वामह मिह पतः प्रतितः रने दानवी का में वा में विस्तिम है तो में माना नो व वे वा न्या स्व नाताइविल्मिसक्तववासुदेशः पिताने जातः नारं जनि युववानेकल ह्यं हपाः पाः दत्ते पुष्ठात्विन न न न वहे जा के न व तस्वितित्रयः पितिवितित्वित्वत्वित्वित्वित्वाति।।।।।

CC-0. Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

त्रस्यभागपंनः हो ने म्छ सासुभगितानसम्बासनस्य ग्याश्वीः श्याचामायः श्रवसाभ दिताः सिवसाः सेचनिता १ थाउना कर्ते कुरालमिलं जेतु मादीनरातीन दूरिक मुंद्रित मिलिले त्य क्रमाचामविद्या। ब्रह्मसंवाविद्यं जनत्यामग्रीमातने वामाजंवतिविष्ठसन्वसीविष्ठाकातिस्याते॥१८॥नाताकासा जनयुनयोनेन्से नाचिन्ताने मायासी हे जुन्म लिसे मन्य माना ति साववी येविस्तास व व से तिनः वीत मंत्री मजतेवेला मंज्ञ व प्राप्तनंपूरं के दिने भू में तेतु॥२०॥ ते वेरे वि जिर्ता मिलि माला चित्रतिसि द्विद्धे चेत्रा वित्त विष्हां सं व हो वा ह प्रमाण पास on Won 187 197 And Old Party, Deint: Digitzed by San Land Party and Party Part

का विवासा नाम विवास निधिना विवास सम्माना निया ने नि स्ति विमेदाननाओं संपिष्ट्या मध्यिन जीवनः सन्बि हा ने से पारे वी सब व्याज विवानी की ना का से ना । १ ४।।। उपाद्यम्म सम्मिति वे कि दिशानि स्विक स्वानि व् त्ये के त्य मानं प्रमानां सर्वित मिनल्यायाः स्ति ये मेते न्यहेतः सकल सुश असीमामा के जो मार्च वृति॥ रहा कि विता कि वि सिर्ह म के स्वारा गु सात्रा विने जी मते वें के देशा वने दाता गुने बे न मः।।२३।।इति श्रीकिता विकासिय सर्व ते ने त्य ते ए श्री महेक दत्ता प्रस् वैदाता वाक्ष्यहति व बन्धाराश्ची तस्यो ता वरा जस मात्रवा

त्रानन ५ माला हिन

CC-0: Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham